ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

मंगलेश डबराल की कविता में बिम्ब–विधान

Bimb-Vidhan in The Poem of Manglesh Dabral

Paper Submission: 12/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

केशव यादव
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कवि मंगलेश डबराल अपने समकालीन जनवादी कवियों से कई अर्थों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी कविताएँ समसामयिक जन–जीवन का प्रतिनिधित्व करती दिखाई देती हैं। इनके द्वारा उठाये गए विषय किसी न किसी रूप में जन सामान्य से संबद्ध हैं। इनकी कविताओं में जहाँ एक ओर बचपन है, छूटी जगहों की यादें हैं, अंधेरे उजालों में खुलती खिड़कियाँ हैं, आस–पास घिर आयी रातें हैं, तो दूसरी ओर सड़कें, टहनियाँ, पानी, पर्वत और फूल तथा रोशनी आदि प्रेरणा के स्त्रोत बनकर आए हैं। इनकी कविताओं में विकट संघर्ष से जूझता व्यक्ति टूटता नहीं है बल्कि उससे उबरने की क्षमता भी रखता है। इनकी कविताओं के पात्रों में जहाँ एक ओर पलायन के कारण अपनों से बिछुड़ने की छटपटाहट है वहीं दूसरी ओर रम्य प्राकृतिक परिवेश को भुला पाना असंभव सा जान पड़ता है। वस्तुतः समकालीन हिन्दी कविता और कवि मंगलेश डबराल के काव्यसंग्रह में बिम्ब योजना की वे उज्जवल पगडण्डियाँ हैं जिस पर पग–पग थिरकती 'पहाड़ पर लालटेन' की भावाकूल तन्मयता, 'घर का रास्ता' की समस्या एवं शांति की आस्था, 'हम जो देखते हैं' में नारी चेतना, 'आवाज भी एक जगह' वर्णगत संकीर्ण मान्यताएँ व्यक्त होती दिखाई देती हैं। अतः अनेक बिम्ब जीवन के विविध पक्षों से मंगलेश डबराल ने चयनित किए हैं।

Sahitya Akademi Award conferred poet Manglesh Dabral holds a special place in many respects from his contemporary populist poets. His poems appear to represent contemporary public life. The topics raised by him are related to the public in some form or the other. In one of his poems, where there is childhood, there are memories of missed places, windows opened in dark light, there are nights surrounded, then on the other side roads, twigs, water, mountains and flowers and lights etc. came as sources of inspiration. Huh. In his poems, a person struggling with formidable struggle does not break down but also has the ability to overcome it. While the characters in his poems have the clamor to get away from their own people due to migration, on the other hand it seems impossible to forget the beautiful natural surroundings. In fact, the poems of contemporary Hindi poetry and the poetry of poet Manglesh Dabral are the bright trails of the Bimba plan on which the turban-twilight twirls the lanterns on the mountain, the problem of 'home way' and the faith of peace, 'Hum Jo We see 'feminine consciousness,' voice is also a place ', the characters appear to express narrow beliefs. Therefore, many images have been selected by Manglesh Dabral from various aspects of life.

मुख्य शब्द : विसंगति, विकृतियों, नैराश्य, झिंगुर, कंसेप्चुवल, परसेप्चुवल, जीवंतता, मूर्त–अमूर्त, प्रेषणीय, चित्रमयता, संक्षिप्तता।

Discrepancy, Distortions, Despair, Jhingur, Conception, Perceptualism, Vibrancy, Tangible-Abstract, Dispatching, Pictoriality, Brevity.

प्रस्तावना

16 मई 1948 में टिहरी गढवाल जिले के काफलपानी गाँव में जन्म लेने वाले मंगलेश डबराल समकालीन कवियों में से एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समाज में जितना भी बदलाव हुआ है, उसको सभी कवियों ने अपने काव्य से जोड़ा है और सामाजिक जीवन के प्रत्येक पक्ष को उभारा है। उन समकालीन कवियों में मंगलेश डबराल का स्थान उल्लेखनीय रहा है। मंगलेश डबराल शुरू से ही समाजवादी व्यवस्था के पक्षधर रहे हैं, विशेष रूप से समाज के यथार्थ रूप को सामने लाने वाले कवि सिद्ध हुए हैं। डबराल जी बहुमुखी प्रतिभाशाली रचनाकारों में से एक है। वे जनवादी कवि, विचारक,

अनुवादक के रूप में विख्यात हैं। मंगलेश डबराल पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव रहा है। इसलिए उनकी कविताएँ आम–आदमी के जीवन को स्पर्श करती हैं। संगीत के स्वर के माध्यम से एक कलाकार की अनुभूति की सच्चाई भी उनकी कविताओं में व्यक्त हुई है। उन्होंने समकालीन कवियों के साथ वर्तमान मानवीय जीवन की बढती विसंगति, विकृतियों को उजागर करने का प्रयास किया है। वस्तुतः समकालीन कविता में मनुष्य को प्रकृति के साथ आत्मीयता से जोड़ने वाले कवि मंगलेश डबराल हैं। उनकी कविताओं में आम–आदमी के दुःख, नैराश्य, दमित जीवन की विसंगतियों का चित्रण है। कवि मंगलेश डबराल अपनी कविताओं में आम आदमी की आवाज को संगीत की ध्वनियों द्वारा जन–सामान्य तक पहुँचाते हैं। इसलिए उनकी अनेक कविताएँ सामान्य आदमी का पक्ष लेती हैं। मंगलेश डबराल की कविताएँ प्रतीकात्मक हैं। इसलिए उनकी कविता में पहाड़, पेड़, पत्ते, नदी, कुत्ता, घोड़ा, बाघ, सियार, झिंगुर आदि आए हैं। आज के समाज में बढ रहे अकेलेपन, विसंगति, नैराश्य आदि समस्याओं को कवि ने 'घर का रास्ता' संग्रह में चित्रित किया है। अतः उनकी कविताओं में भारतीय गाँवो का यथार्थ चित्रण एवं महानगरीय जीवन भी देखने को मिलता है। मंगलेश डबराल का अधिक समय महानगर में बीतने के कारण महानगरीय जीवन में आयी स्वानुभूति को उन्होंने अपनी कविता में व्यक्त किया है। कवि मंगलेश सजग कवि हैं। उन्होंने कविता के सकारात्मक पहलुओं को अधिक महत्व दिया है। सहजता, स्वाभाविकता उनकी कविताओं की सबसे बड़ी शक्ति है। कवि मंगलेश की कविताओं में उभरे नारी चित्रण की सहज स्वाभाविक रचना पाठक के हृदय को अपने आप छू लेती है। उनकी कविताओं में नारी के विविध रूपों का चित्रण हुआ है। पारंपरिक नारी से वर्तमान नारी के सुख–दुःख को उन्होंने अपनी कविताओं का विषय बनाया है।

हम कह सकते हैं कि मंगलेश डबराल की कविता वर्तमान राजनीति का पर्दाफाश करती है। इसके साथ ही जन–सामान्य के जीवन का यथार्थ चित्रण इन कविताओं में हुआ है। कुल मिलाकर मंगलेश डबराल की कविताएँ अनैतिकता पर करारा व्यंग करती हैं। वह अनैतिकता चाहे राजनीतिक हो या सामाजिक, उसका विरोध मंगलेश डबराल की कविता का मुख्य विषय रहा है। वस्तुतः मंगलेश डबराल की बिम्ब योजना सामाजिक समस्याओं को उजागर करने में पूर्ण रूप से सफल दिखाई देती हैं। बिम्बों के माध्यम से उन्होंने समाज के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। बिम्ब योजना के बारे में खुद मंगलेश जी कहते हैं–

''मेरी कविताओं में बिम्ब जरूर होंगे पर वह बिंबात्मक कविता नहीं, दृश्यात्मक ज्यादा है। कविता में एक चीज एक दृश्य के रूप में उपस्थित होती है। बिम्ब एक शारीरिक उपस्थिति है। बिम्ब कंसेप्चुवल, अवधारणात्मक होता है, जबकि दृश्य परसेप्चुवल है। उसे छुआ, घुमाया जा सकता है, उसमें गति और जीवन है। अगर यह कहा जाये कि कविता दृश्यों का वर्णन है, तो शायद यह मेरे ज्यादा अनुकूल रहेगा।''

समकालीन हिन्दी कवि मंगलेश डबराल ने अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करने वाले सशक्त माध्यम का प्रयोग अपने काव्य में बखूबी किया है। अनुभूति की गहराई, जीवंतता, संक्षिप्ता और सरलता कवि मंगलेश डबराल के बिम्ब विधान के विशेष आकर्षण हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मंगलेश डबराल के काव्य में बिम्बों का प्रयोग व्यापक स्तर पर हुआ है। उन्होंने बिम्बों का प्रयोग अपनी भाषा में चित्रमयता की क्षमता बढाने और चिन्तन को अधिक प्रेषणीय बनाने के लिए किया है। उनके बिम्बों में विविधता और नवीनता है। जिस प्रकार एक चित्रकार कुछ ही रेखाओं में चित्र–आकृति को स्पष्ट कर देता है, उसी प्रकार मंगलेश डबराल भी थोड़े शब्दों में वांछित बिम्ब गढ लेते हैं। उनके काव्य–संग्रहों में बिम्ब–विधान के विविध रूपों के उदाहरण संक्षेप में निम्न प्रकार से हैं–

दृश्य–बिम्ब

दृश्य–बिम्ब वे बिम्ब होते हैं, जिनमें पूरा दृश्य आँखों के सामने अपने समग्र रूपाकार में उपस्थित हो जाए। दृश्य बिम्ब की महत्ता प्रत्यक्ष अनुभवाश्रित बिम्बों में स्वतः स्पष्ट है क्योंकि नेत्र सभी ज्ञानेन्द्रियों में से महत्वपूर्ण हैं और प्रत्यक्ष देखी हुई और अनुभव की हुई वस्तु के साथ व्यक्ति का संबंध सहज ही बन जाता है। मंगलेश डबराल के काव्य में ऐसे बिम्बों का प्रयोग समग्र रूप से देखने को मिलता है।

''चारों ओर पत्थरों में दबा हुआ मुख
फिर उभरेगा झांकेगा कभी
किसी दरार से अचानक
पिघल जायेगा जैसे बीते साल की बर्फ
शिखरों से टूटते आयेंगे फूल
अंतहीन आलिंगनों के बीच एक आवाज
छटपटाती रहेगी
चिड़िया की तरह लहूलुहान'' [1]
(वसंत)

स्थिर बिम्ब

स्थिर दृश्य बिम्ब मात्र चित्र बोध कराते हैं। स्थिर बिम्ब समकालीन कविता के मंगलेश डबराल के काव्य में प्रचुर रूप मिलते हैं। 'पहाड़ पर लालटेन' में स्थिर दृश्य बिम्ब अलंकृत शैली में व्यक्त हैं, जैसे–

''शुरू होंगी आवाजें
पहले एक कुत्ता भूँकेगा पास से
कुछ दूर हिनहिनाएगा एक घोड़ा
बस्ती के पार सियार बोलेंगे
बीच में कहीं होगा झींगुर का बोलना
पत्तों का हिलना
बीच में कही होगा
रास्ते पर किसी का अकेले चलना।'' [2]
(पहाड़ पर लालटेन)

अधिकतर स्थिर बिम्बों का संबंध साँझ, आकाश, समुद्र तट से है। 'घर का रास्ता' में अनेक स्थिर बिम्ब प्राकृतिक परिदृश्य को उभारते हैं जैसे–

''शायद वहां थोड़ी–सी नमी थी
या हल्का–सा कोई रंग
शायद सिहरन या उम्मीद
शायद वहां एक आंसू था

या एक चुंबन
याद रखने के लिए
शायद वहां बर्फ़ थी
या छोटा–सा एक हाथ
या सिर्फ़ छूने की कोशिश।'' [3]
(घर का रास्ता)

प्रकृतिपरक बिम्ब

मंगलेश डबराल का प्रकृति के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है। काफलपानी के पर्वतीय प्रदेश में जन्म लेने और अपना प्रारम्भिक जीवन प्रकृति की गोद में बिताने के कारण प्रकृति के साथ कवि मन का सम्बन्ध जुड़ना अत्यन्त सहज और स्वाभाविक है। पहाड़, जंगल, पेड़, पत्थर, नदी, झरने, चिड़ियां, बादल, ठूँठ, पत्ते, हवा इत्यादि बार–बार दृश्य की तरह उनकी कविताओं में आते हैं। बर्फ के गिरने के माध्यम से उन्होंने ठप होती जिन्दगी और उस पर भी चुपचाप लगातार बर्फ के गिरते रहने को जिस यथार्थता एवं कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है वह अद्‌भुत है–

''बर्फ के नीचे दबी है घास
चिड़ियां और उनके घोंसले
और खंडहर और टूटे हुए चूल्हे
लोग बिना खाये जब सो जाते हैं
वह चुपचाप गिरती रहती है
बर्फ में जो भी पैर आगे बढता है
उस पर गिरती है बर्फ।'' [4]
(पहाड़ पर लालटेन)

प्रकृति कवि मंगलेश के जीवन का एक हिस्सा है, मंगलेश की अधिकांश बातों या उदाहरणों में प्रकृति सहज रूप में शामिल होकर स्वयं को अभिव्यक्त करती है। कवि मंगलेश के महानगर में आने के बाद स्मृति से उपजी पहाड़ी क्षेत्र का दृश्य–

''पत्थरों के इस रास्ते में कई बार आया हूँ
मैंने देखा है पानी का वेग रोकते
आदमियों से भी ऊँचे पत्थरों को
और उन्हें भी जो इनके सामने बिल्कुल बच्चे हैं
जिनके भीतर से नदी आसानी से बह जाती है।'' [5]
(घर का रास्ता)

मंगलेश डबराल प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग रखते हैं। उनकी रचनाएँ इसलिए प्रेम की और प्रकृति की रचनाएँ हैं। कवि मंगलेश जहाँ से आए थे, वहाँ की प्रकृति और मानवीय विशिष्टता की स्मृति ये दोनों उनकी कविता में एक खास तरह की चमक भरती रही हैं। खुद मंगलेश कहते हैं कि–

''जब जैसा परिवेश मिलता रहा उसका असर मुझ पर ज्यादा हुआ। मैं चीजों से बहुत प्रभावित होने वाला व्यक्ति हूँ।'' [6]

पहाड़ पर लालटेन कविता संग्रह की 'खिड़की' कविता में हम प्राकृतिक रूप को देख सकते हैं। कवि कहता है कि खिड़की के बाहर एक नयी सुबह मेरा इंतजार कर रही है। वह इस इंतजार को प्रकृति के एक बिम्ब के रूप में चित्रित करते हुए कहते हैं–

''इस खिड़की के बाहर
मेरा इंतजार हो रहा है
मुट्ठियाँ ताने हुए शब्दों की तरह
हरे पत्तों से भरपूर सुबह दिखेगी
एक बड़ी भूरी चिड़ियां की तरह
कोहरा टहनियों पर टिका होगा।
.....
सूरज होगा एक–एक दृश्य से टकराता हुआ
इस खिड़की के बाहर
मेरा इंतजार हो रहा है।'' [7]
(पहाड़ पर लालटेन)

कवि ने प्रकृति परक बिम्बों के माध्यम से प्रकृति के कण–कण में छिपी उन्मुक्तता, जीवंतता, निर्भयता, कर्मण्या, सुन्दरता एवं प्रेरक तत्वों को बड़ी सूक्ष्मता एवं सजीवता के साथ चित्रित किया है।

''शिखरों से टकराती हुई तुम्हारी आवाज
सीलन–भरी घाटी में गिरती है
और बीतते दुश्यों की धुंध से
छनकर आते रहते हैं तुम्हारे देह–वर्ष'' [8]
.....
(पहाड़ पर लालटेन)

गतिशील बिम्ब

गतिशील बिम्ब जहाँ काव्य में गतिशीलता लाते हैं वहीं चितंन क्रियाशीलता को परिलक्षित करते हैं। अतः मंगलेश डबराल न केवल मनुष्य–जीवन को अंकित करते समय बल्कि प्रकृति का साक्षात्कार करते समय भी वे उसमें जीवन की अनुभूति करते हैं और पूरी छवि को गतिशील रूप में अंकित करते हैं।

काव्य संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन' में जहाँ बिम्बों की व्यापकता है, वही कथन की सूक्ष्मता भी है। प्रस्तुत काव्यांश में गतिशील बिम्ब दृष्टव्य हैं–

''चिड़ियां अपने हिस्से की आवाजें
कर चुकी हैं लोग जा चुके हैं
रोशनियां राख हो चुकी हैं
सड़क के दोनों ओर
घरों के दरवाजे बंद हैं
मैं आवाज देता हूँ
और वह लौट आती है मेरे पास'' 9
(पहाड़ पर लालटेन)

मंगलेश डबराल के काव्यसंग्रह 'घर का रास्ता' में प्रकृति के विकराल रूप का गतिशील बिम्ब इस प्रकार उभरा है–

''बाघ और बकरी साथ–साथ हैं
दिखाते हैं एक ही जगह
अपना पानी पीना
बाघ है एक अच्छा बाघ
बकरी से पूछता है
तुम भी तो हो उतनी ही अच्छी बकरी।'' [10]
(घर का रास्ता)

मानस बिम्ब

मानस बिम्ब का संबंध मानवीय चेतना के बौद्विक एवं भावात्मकता स्तर से है। ये विविध भावों और मनः स्थितियों को मूर्त करने वाले होते हैं। मानस बिम्बों से समकालीन कविता का काव्य और मंगलेश डबराल के

काव्यसंग्रह इससे ओतप्रोत हैं। मानस बिम्ब का उदाहरण द्रष्टव्य हैं।

''कितने सारे पत्ते उड़कर आते हैं
चेहरे पर मेरे बचपन के पेड़ों से
एक झील अपनी लहरें
मुझ तक भेजती है
लहर की तरह कांपती है रात
और उस पर मैं चलता हूँ
चेहरे पर पत्तों की मृत्यु लिये हुए।'' [11]
(पहाड़ पर लालटेन)

विचार बिम्ब

विचार बिम्ब मंगलेश डबराल की 'हम हो देखते हैं', 'आवाज भी एक जगह है' काव्य विचार–बिम्ब की दृष्टि से महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं, यद्यपि समकालीन हिन्दी कविता के सभी काव्य विचारों को मूर्त रूप देने में सफल हुए हैं। माँ का मानवीय मूल्य विघटन पर यह विचार बिम्ब है–

''घर में माँ की कोई तस्वीर नहीं
जब भी तस्वीर खिंचवाने का मौका आता है
माँ घर में खोयी हुई किसी चीज को ढूंढ रही होती हैं
या लकड़ी घास और पानी लेने गई होती हैं
जंगल में उसे एक बार बाघ भी मिला
पर वह डरी नहीं
उसने बाघ को भगाया घास काटी घर आकर
आग जलायी और सबके लिए खाना पकाया'' [12]
(हम जो देखते हैं)

पिता के प्रति कथन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं–

''पिता की छोटी–छोटी बहुत–सी तस्वीरें
पूरे घर में बिखरी हैं
उनकी आँखो में कोई पारदर्शी चीज
साफ चमकती है
वह अच्छाई है.....तस्वीर में पिता खांसते नहीं''[13]
(हम जो देखते हैं)

स्पर्श बिम्ब

जब कवि कोमल एवं कठोर पदार्थों के अनुभव को शब्दों के माध्यम से अभिव्यंजित करता है तो स्पर्श बिम्ब का निर्माण होता है। स्पर्श बिम्बों की संरचना स्पर्श रोमांच, कम्प, शीतलता, उष्णता, यौन भाव, स्मृति चित्र, सात्विक भाव आदि रूपों में हुई है। मंगलेश डबराल के काव्य में ऐसे बिम्बों का निर्माण जगह–जगह पर हुआ है। 'पहाड़ पर लालटेन' काव्य–संग्रह में स्पर्श बिम्ब के उदाहरण देखने को मिलते हैं। जो इस प्रकार हैं–

''तुम गुजरती जाती हो आहटों से दूर
हाथ बढाकर मैं तुम्हारे हाथ छूता हूँ
चौराहों पर रोशनियों के बीच
उदास और लम्बे रास्ते से चलकर आये
मेरे चुंबन
तुम्हारे चेहरे पर थरथराते हैं कुछ देर
कोहरे की तरह
तुम्हारी देह और रक्त में प्रवेश करते हैं
रात को वे चमकते हैं
तुम्हारी नींद में'' [14]
(पहाड़ पर लालटेन)

श्रव्य बिम्ब

श्रव्य–बिम्ब का दूसरा नाम नाद–बिम्ब भी है। इसका सम्बन्ध कर्णेन्द्रिय से होता है। ध्वनि, छन्द, लय, तुक आदि से सम्बन्धित बिम्ब श्रव्य–बिम्ब विधानान्तर्गत ग्रहण किये जाते हैं। मंगलेश डबराल के बिम्ब–विधान में श्रव्य–बिम्ब की प्रवृत्ति प्रमुखता और विविधता लिए हुए है। कवि अपनी 'स्त्रियाँ' कविता में स्त्री के माध्यम से श्रव्य बिम्ब का सृजन करते हुए लिखते हैं–

''प्रेम करने के अपराध में
उन्हें अच्छी तरह भुला दिया जा चुका होता है
तब कहीं से आती है उनके होने की आवाज़
उनका कोई प्रिय गीत अचानक सुनाई दे जाता है
वे धीमे कोमल आवाज़ में कुछ कहती दिखती हैं
जिसे एक भारी कोलाहल के बीच
हम सुन नहीं पाते।'' [15]
(आवाज़ भी एक जगह है)

अध्ययन का उद्देश्य

बिम्ब विधान का प्रयोग छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद की कविताओं के साथ–साथ समकालीन हिंदी कविता में समग्र रूप से देखने को मिलता हैं। वस्तुत: बिम्ब विधान को समझें जाने बिना कविता की मूल संवेदना को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा सकता है। अतः समकालीन कवि मंगलेश डबराल की कविता में बिम्ब विधान के महत्त्व को रेखांकित करना मेरे इस शोध प्रत्र का प्रमुख उद्देश्य है

निष्कर्ष

इस प्रकार समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि मंगलेश डबराल की कविताएं समाज के विविध पक्षों से अपने पाठकों को रूबरू कराती हैं इनकी कविताएँ समाज में व्याप्त विसंगतियों का प्रामाणिक दस्तावेज है इनकी कविताओं में सामाजिक समस्याओं को उठाने के साथ–साथ उसके समाधान को भी अभिव्यक्ति दी गई है इनकी कविताओं में विशेष रूप से प्रकृति के कोमलतम तत्व, प्रेरणा, स्रोत बन कर आए हैं। वस्तुत: मंगलेश डबराल की बिम्ब योजना भी लाजवाब है इन्होंने बिम्बों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को उज़ागर करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनकी बिम्ब योजना पाठकों के हृदय को छूती हुई उन्हें संवेदनात्मक धरातल की ओर ले जाती है। अत: मंगलेश डबराल का बिंब विधान सरल स्वच्छ चित्रात्मक ध्वन्यात्मक, दृश्यात्मक आदि रूपों में समाहित हुआ है। कवि मंगलेश की कविताएँ समकालीन परिस्थितियों का यथार्थ दस्तावेज है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, पहाड़ पर लालटेन–'वसंत', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 15*
2. *डबराल मंगलेशः प्रतिनिधि कविताएँ, पहाड़ पर लालटेन–'आवाजें', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या 27*
3. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, घर का रास्ता–'एक जीवन के लिए', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 41*

4. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, पहाड़ पर लालटेन–'गिरना', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2019, पृष्ठ संख्या 18*
5. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, घर का रास्ता–'पत्थरों की कहानी', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 52*
6. *डॉ. श्रीमती विधावती जी. राजपूत, मंगलेश डबरालः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, अभय प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करणः 2011, पृष्ठ संख्या 66*
7. *डबराल मंगलेशः प्रतिनिधि कविताएँ, पहाड़ पर लालटेन–'खिड़की', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करणः 2017, पृष्ठ संख्या 36–37*
8. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, पहाड़ पर लालटेन–'अंतराल', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 30*
9. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, पहाड़ पर लालटेन–'पत्तों की मृत्यु', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 34*
10. *डबराल मंगलेशः घर का रास्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 18*
11. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, पहाड़ पर लालटेन–'पत्तों की मृत्यु', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 34*
12. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, हम जो देखते हैं–'माँ की तस्वीर', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 72–73*
13. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, हम जो देखते हैं–'पिता की तस्वीर', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 71*
14. *डबराल मंगलेशः कवि ने कहा सीरीज, पहाड़ पर लालटेन–'लंबा रास्ता', किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करणः 2019, पृष्ठ संख्या 30*
15. *डबराल मंगलेशः आवाज भी एक जगह है–'स्त्रियाँ', वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, द्वितीय संस्करणः 2004, पृष्ठ संख्या 19*